'जो सहता है, वही रहता है' का हुआ विमोचन

कलापूर्ण जीवन जीने का तरीका सिखायेगी यह कृति : आचार्य महाश्रमण

प्रस्तुत पुस्तक आचार्य महाप्रज्ञ की 300वीं पुस्तक है

सरदारशहर 17 नवम्बर, 2010

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित जीवन की दिशा बदलने वाली आचार्य महाप्रज्ञ की 300वीं पुस्तक 'जो सहता है, वही रहता है' का विमोचन आचार्य महाश्रमण ने आज तेरापंथ भवन में आयोजित एक विशिष्ट कार्यक्रम एवं साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा, मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा की मौजुदगी में किया। सम्पादक मुनि जयंतकुमार ने आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण से 8 घण्टा पूर्व ही पुस्तक के सन्दर्भ में चर्चा की थी। मुनि आचार्य महाप्रज्ञ के 91वें जन्मदिवस पर सरप्राईज के तौर पर पुस्तक को उनके करकमलों में समर्पित करना चाहते थे, पर महाप्रयाण के कारण उनकी यह इच्छा अधूरी रह गई थी। इस पुस्तक की लोगों में मांग बढ़ रही है। प्रकाशन से पूर्व ही एडवांस बुकिंग प्रारंभ हो गई, जैसे ही पुस्तक का विमोचन हुआ लोगों ने 'ओम अर्हम्' की ध्वनि से हर्ष प्रकट किया।

पुस्तक के विमोचन समारोह में आचार्य महाश्रमण ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ की कृति 'जो सहता है, वही रहता है' कलापूर्ण जीवन जीने का तरीका सीखायेगी ऐसा विश्वास है। उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ का साहित्य वांग्मय है। वे जो प्रवचन करते या उनकी वाणी से जो निकलता वही साहित्य बन जाता। आचार्य महाश्रमण ने पुस्तक के संपादक मुनि जयंतकुमार एवं सहसंपादक अशोक संचेती के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ तेरापंथ के अधिपति थे, इतना बड़ा संत समुदाय था, पर वे हमेशा तनावमुक्त रहते थे और चैन की निंद लेते, उनकी इस पुस्तक से पाठकों को प्रेरणा मिले ऐसी मंगल कामना।

पुस्तक के सम्पादक मुनि जयंतकुमार ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ मेरे जीवन के निर्माता थे। उनके आशीर्वाद से ही सम्पादन के क्षेत्र में प्रवेश किया है और उनकी प्रेरणा से ही लेखन कार्य शुरू किया था। उन्होंने आचार्य महाश्रमण का अभिव्यक्ति के तौर पर आशीर्वाद प्रदान कराने के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि मेरे प्रभु से मैंने जो अंतिम समय में वादा किया था वह पूरा करते हुए जीवन को सम्यक दिशा देने वाले आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक जो सहता है वही रहता है आचार्य महाश्रमण को समर्पित कर रहा हूं। मुनि जयंतकुमार ने पुस्तक की प्रतियां आचार्यवर को भेंट करने के पश्चात साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा एवं मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा को भेंट की, कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

आचार्य महाश्रमण ने किया 'सेवा संदीपन' का विमोचन

आचार्य महाश्रमण ने तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में प्रतिष्ठित मंगलचन्द भंवरलाल की स्थापना के 80वें वर्ष के गौरवमय अवसर पर उनके दिवंगत स्तभों को समर्पित स्मृति ग्रंथ 'सेवा संदीपन' का विमोचन किया। मंगलचन्द भंवरलाल बैद परिवार की सेवाओं को अनुकरणीय बताते हुए उन्होंने कहा कि जिसमें जीवन में संयम होता है, सेवा की भावना होती है, शिक्षा होती है, वह दुनिया का अच्छा आदमी होता है। भंवरलाल में ज्ञान था, सजगता थी, उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में साधु-साध्वियों को पढ़ाने में योगदान दिया। उनका सदाचारपूर्ण जीवन मुझे आकृष्ट कर रहा है। उनकी सेवाएं स्मरणीय है, अनुकरणीय है, आचार्य महाश्रमण ने सज्मूर्ण बैद परिवार की सेवा भावना की सरहाना की।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि बैद परिवार ने सजगता एवं निस्वार्थ भावना से धर्मसंघ की सेवा की है। आचार्यों के कृपापात्र परिवारों में रहा है, यह आचार्यश्री के इंगित को समझकर कार्य करने वाला परिवार है। मुज्यनियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने भी अपने परिवार व्यक्त किये। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, गांधी विद्या मन्दिर संस्थान के अध्यक्ष कनकमल दुगड़, ग्रंथ के सज़्मादक संपतमल सुराणा, किशनलाल बैद ने अभिव्यक्त दी। ग्रंथ की प्रथम प्रति विमोचन हेतु कन्हैयालाल बैद कनकमल दुगड़, किशनलाल बैद, मदनचन्द बैद, डॉ. जतन बैद एवं संपत सुराणा ने आचार्य महाश्रमण को भेंट की। परिवार की महिलाओं ने पुस्तक की प्रति साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा एवं मुज्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा को भेंट की। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

इस अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री रतन दुगड़ ने समिति की तरफ से मंगलचन्द, भंवरलाल बैद परिवार के प्रति साधुवाद, धन्यवाद ज्ञापित किया एवं अन्य घोषणाएं भी की।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ समाधि स्थल का शिलान्यास समारोह आज

कुछ व्यक्ति इतिहास का सर्जन करते हैं लेकिन कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जिनसे इतिहास निर्मित होता है। इतिहास पुरुष के रूप में वंदनीय होने वाले व्यक्ति विरले ही होते हैं। उन विरले पुरुषों की प्रथम पंक्ति में स्मरणी बनने वाले इतिहास सृष्टा, महापुरुष, राष्ट्र संत का नाम है - 'आचार्यश्री महाप्रज्ञ।' आचार्यश्री महाप्रज्ञ की बाहरी पहचान जैन तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें आचार्य के रूप में होते हुए आन्तरिक पहचान से वे मानवता के मसीहा थे। दिनांक 9 मई, 2010 को राजस्थान के चुरु जिले के सरदारशहर नगर में उनका महाप्रयाण पूरी मानवता को स्तब्ध कर गया। दिनांक 10 मई 2010 को सरदारशहर में पूरे राजकीय सज़्मान के साथ लाखों लोगों की उपस्थित में उस महामानव को अंतिम विदाई दी गई। जिस स्थान पर उनका अंतिम संस्कार किया गया वह स्थान लाखों लोगों की आस्था का केन्द्र बन गया। उस स्थान को ऐतिहासिक स्वरूप प्रदान करने के लिए तेरापंथ धर्मसंघ की शीर्षस्थ प्रतिनिधि संस्था - जैन श्वेताज़्बर तेरापंथी महासभा द्वारा भव्य समाधि स्थल का निर्माण करवाया जा रहा है जिसका शिलान्यास समारोह कल 18 नवज़्बर, 2010 को प्रात: 7.15 बजे नेशनल हाईवे रतनगढ़ रोड, सरदारशहर में होगा।

महासभा के अध्यक्ष चैनरूप चिण्डालिया ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि इस महत्वूपर्ण कार्यक्रम में देशभर से श्रद्धालुजन उपस्थित होंगे। उन्होंने बताया कि इस समाधि स्थल पर आकर श्रद्धालु आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं उनसे प्राप्त उपदेशों की स्मृति करते हुए आध्यात्मिक चेतना प्राप्त कर सकें, इसी लक्ष्य से इसका निर्माण किया जाएगा। महासभा के प्रधान ट्रस्टी राजेन्द्र बच्छावत ने बताया कि इस समाधि स्थल में ध्यान केन्द्र, पुस्तकालय, रोकोटिक सिस्टम एवं लगभग 50 फीट ऊंचा कमलाकार गुज़्बद का निर्माण किया जाएगा। आने वाले श्रद्धालुओं की समुचित आवास व्यवस्था हेतु अतिथिगृह का निर्माण भी प्रस्तावित है।

चिकित्सा सुविधा का शुभारंभ

सरदारशहर 17 नवम्बर, 2010

आचार्य महाश्रमण का ऐतिहासिक चातुर्मास सरदारशहर में सानंद सम्पन्नता की ओर है। इस प्रवास की स्मृतियों को चिरस्थायी बनाने, सरदारशहर के तेरापंथी समाज के जरूरतमन्द भाई बहिनों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाने हेतु अपने पिता स्व. बच्छराज एवं मातुश्री रतनीदेवी नाहटा की स्मृति में बिमलकुमार, संदीप, प्रियंक नाहटा, गुवाहाटी ने चिकित्सा सहायता योजना का प्रारंभ किया है। तेरापंथ समाज के जिन परिवारों को चिकित्सा सहायता की अपेक्षा हो उन भाई-बहनों से अनुरोध है कि इस सेवा से लाभान्वित होने हेतु सुजानमल दुगड़, पन्नालाल सेठिया, अशोक नाहटा, करणीदान चिण्डालिया, पीरदान बरमेचा, कमलकुमार बोथरा से सम्पर्क कर आवेदन पत्र प्राप्त कर जमा करा देवें। जिन परिवारों को जय तुलसी फाउण्डेशन से संपोषण प्राप्त हो रहा है वे इस चिकित्सा सहायता योजना में स्वतः ही सम्मिलित माने जाएंगे

- शीतल बरड़िया